

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता: प्राथमिकताएँ एवं
सामरिक महत्व

www.nextias.com

भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता: प्राथमिकताएँ एवं सामरिक महत्व

संदर्भ

- भारत का ब्रिक्स अध्यक्षता का अवसर ऐसे समय प्राप्त हुआ है जब विश्व अनिश्चितताओं का सामना कर रहा है — भू-राजनीतिक तनाव, आर्थिक विखंडन और तकनीकी व्यवधान। इसका उद्देश्य ब्रिक्स देशों की सामूहिक क्षमता का उपयोग कर वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देना है।

ब्रिक्स

- मूल रूप से **BRIC** (2001, जिम ओ'नील द्वारा गढ़ा गया), और 2010 में दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने पर **BRICS** बना।
- **सदस्य:** ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका। बाद में सदस्यता का विस्तार कर मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और इंडोनेशिया को शामिल किया गया।
- **उद्देश्य:**
 - बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को प्रोत्साहित करना
 - IMF, विश्व बैंक, UNSC जैसे वैश्विक वित्तीय संस्थानों में सुधार
 - दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना
 - सतत विकास और समावेशी वृद्धि का समर्थन करना

महत्व

- 2026 में ब्रिक्स देशों का कुल GDP (नाममात्र डॉलर में) 32 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है, जो वैश्विक GDP का लगभग 28–30% है।
- क्रय शक्ति समता (PPP) के आधार पर ब्रिक्स का GDP 78 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो वैश्विक GDP का 40% से अधिक है। यह G7 के 27.8% हिस्से से आगे निकल चुका है।

संस्थागत तंत्र

- **न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB), 2014**
 - **मुख्यालय:** शंघाई
 - **उद्देश्य:** अवसंरचना एवं सतत विकास परियोजनाओं का वित्तपोषण
 - विश्व बैंक/IMF प्रभुत्व का विकल्प माना जाता है
- **कंटिजेंट रिज़र्व अरेंजमेंट (CRA):**
 - वित्तीय संकट के समय तरलता सहायता प्रदान करता है
 - पश्चिमी नेतृत्व वाले वित्तीय तंत्र पर निर्भरता कम करने में सहायक

ब्रिक्स अध्यक्षता

- ब्रिक्स अध्यक्षता वार्षिक घूर्णनशील अध्यक्षता है, जिसमें एक सदस्य देश एक वर्ष के लिए मंच का नेतृत्व करता है।
- प्रत्येक देश एक वर्ष के लिए अध्यक्ष (मेज़बान) होता है।
- यह क्रम वर्णानुक्रम के आधार पर परिवर्तित होता है।

भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता

- भारत ने 1 जनवरी 2026 को, 2009 में इस समूह की स्थापना के बाद चौथी बार ब्रिक्स अध्यक्षता ग्रहण की।
- भारत की अध्यक्षता का मार्गदर्शक विषय है: “लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण”, जो जन-केंद्रित और मानवता-प्रथम दृष्टिकोण को दर्शाता है।

भारत की अध्यक्षता के अंतर्गत प्रमुख प्राथमिकताएँ:

- **संस्थागत सुदृढीकरण:** भारत का उद्देश्य ब्रिक्स को एक परामर्शात्मक मंच से क्रियान्वयन-उन्मुख संस्था में विकसित करना है।
 - भारत ने पुनः इस आवश्यकता पर बल दिया कि बहुपक्षीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन (WTO) में सुधार किए जाएँ, ताकि वैश्विक निर्णय-निर्माण संरचनाएँ समकालीन आर्थिक एवं भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित कर सकें।
- **आर्थिक एवं वित्तीय सहयोग:** भारत की अध्यक्षता के अंतर्गत उभरते हुए प्रमुख क्षेत्र हैं:
 - वित्तीय नवाचार, विशेषकर ब्रिक्स केंद्रीय बैंकों की डिजिटल मुद्राओं को जोड़ने का प्रस्ताव।
 - राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार सुविधा।
 - अवसंरचना विकास।
 - सतत वित्त।
- भारत सुधार को अस्थिरता के बिना आगे बढ़ाने पर बल देता है। यह डॉलर-आधारित प्रणाली के प्रति वैचारिक विरोध के बजाय, जहाँ आर्थिक रूप से संभव हो, वहाँ स्थानीय मुद्रा निपटान को संतुलित रूप से समर्थन करता है।
- **आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन:** सेमीकंडक्टर, महत्वपूर्ण खनिज और औषधि क्षेत्र में आपूर्ति श्रृंखला की सुदृढता को एजेंडे में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
 - महत्वपूर्ण खनिजों और प्रौद्योगिकी पर हालिया निर्यात नियंत्रण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं एवं ब्रिक्स एकीकरण पर गंभीर प्रभाव डाल सकते हैं।
- **जलवायु कार्रवाई एवं सतत विकास:** भारत से अपेक्षा है कि वह जलवायु कार्रवाई, आपदा जोखिम न्यूनीकरण और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को आगे बढ़ाएगा। यह COP30 एवं आगामी जलवायु मंचों के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के अनुरूप होगा।
- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI):** भारत की अपनी DPI प्रणाली — जैसे आधार, UPI और CoWIN — उसे ब्रिक्स में प्रौद्योगिकी शासन और डिजिटल सहयोग पर नेतृत्व करने की विशिष्ट स्थिति प्रदान करती है।
 - भारत की अध्यक्षता का केंद्रबिंदु जन-केंद्रित, जलवायु-उन्मुख दृष्टिकोण है, जिसमें लचीलापन और सतत विकास को प्राथमिकता दी गई है।
 - मुख्य प्राथमिकताएँ: जलवायु, स्वास्थ्य और स्वच्छ ऊर्जा।

भारत के सामने चुनौतियाँ

- **आंतरिक विरोधाभासों का प्रबंधन:** ब्रिक्स के तीव्र विस्तार ने इसके महत्व को बढ़ाया है, साथ ही इसकी विविधता भी बढ़ाई है।

- यूरोप और अमेरिका के बीच ट्रांसअटलांटिक साझेदारी में दरारें, तथा NATO के भीतर असहमति ने वैश्विक मामलों में अनिश्चितता को गंभीर किया है, जिससे ब्रिक्स में सहमति निर्माण कठिन हो गया है।
- **सदस्यों के बीच भिन्न हित:** भारत के हित और प्राथमिकताएँ ब्रिक्स में चीन और रूस से काफी भिन्न हैं।
 - चीन नई विश्व व्यवस्था बनाने हेतु तीव्र विस्तार का पक्षधर है।
 - रूस विस्तार को मुख्यतः पश्चिम का सामना करने के साधन के रूप में देखता है।
 - भारत अधिक सतर्क दृष्टिकोण अपनाता है ताकि उसका प्रभाव कम न हो या नेतृत्व कमजोर न पड़े।
- **भू-राजनीतिक विचलन की रोकथाम:** भारत का उद्देश्य है कि ब्रिक्स पश्चिम-विरोधी वैचारिक गुट में परिवर्तित न हो।
 - भारत रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना चाहता है और ब्रिक्स के बाहर भी साझेदारी की अनुमति देता है।

वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में भारत

- भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता उसकी व्यापक विदेश नीति सिद्धांत का विस्तार है, जिसमें **रणनीतिक स्वायत्तता** और **सक्रिय बहुपक्षवाद** का संयोजन है।
 - भारत ने स्वयं को विकसित और विकासशील विश्व के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित किया है।
- भू-राजनीतिक दृष्टि से, भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता को एक स्थिरकारी और सहमति-निर्माण प्रयास के रूप में देखा जा रहा है, विशेषकर ऐसे समय में जब विश्व बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर है।
 - भारत ने दक्षिण-दक्षिण सहयोग, वैश्विक शासन संस्थाओं में सुधार, गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन संक्रमण और विकास वित्तपोषण पर बल दिया है, साथ ही टकरावपूर्ण रुख अपनाने से परहेज किया है।

निष्कर्ष

- कमजोर होती वैश्विक शासन व्यवस्था, संरक्षणवादी नीतियों और बढ़ती अनिश्चितताओं के समय में, ब्रिक्स की 2026 अध्यक्षता भारत के लिए सहयोग, शासन एवं परिणाम सुनिश्चित करने की नई आशाएँ तथा अपेक्षाएँ लेकर आई है।
- भारत इस विविधतापूर्ण समूह में सामंजस्य स्थापित करने के लिए उपयुक्त है, जो परामर्शात्मक, क्रमिक और सहमति-आधारित ढाँचे पर कार्य करता है।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता की प्रमुख प्राथमिकताओं की विवेचना कीजिए तथा बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में इसकी सामरिक महत्ता का विश्लेषण कीजिए।

स्रोत: LM

